**International Journal of Advanced Research and Development**
**ISSN: 2455-4030**
**Impact Factor: RJIF 5.24**
**www.advancedjournal.com**
**Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 572-573**

# प्रेमचन्द कृत 'महाजनी सभ्यता' निबंध की समीक्षात्मक विवेचना

**डॉ0 कुलवन्त सिंह**

सहायक प्रोफेसर (हिन्दी विभाग) एम.एम.पी.जी. कालेज, फतेहाबाद, हरियाणा, भारत।

## प्रस्तावना

प्रेमचन्द साहित्य सार्वजनिक, सार्वदेशिक, सार्वकालिक और सर्वजनसुलभ है। पूंजीपति वर्ग को छोड़कर सब वर्गो को मिली है। इसीलिए उनकी पठनीयता विश्वस्तरीय है। जहां जहां हिन्दी है वहां–वहां प्रेमचन्द है। उनके साहित्य की प्रासंगिकता में किसी को कहीं कोई संशय नही है। सरकारी प्रचार के बावजूद आज भी होरी और गोबर का यथार्थ प्रेमचन्द कालीन ही है। किसानों–मजदूरों के हितों की बात करने वाले नेता उन्ही की गाढ़ी कमाई से महंगी से महंगी गाड़ियां अपने लिए खरीदते हैं। सत्ता की भूख आज भी उस समय से भी कहीं अधिक भंयकर है। भ्रष्टाचारी, रिश्वतखोर धार्मिक पाखण्डी दिन–ब–दिन शक्तिशाली होते जा रहे हैं। जीवनमूल्य पतनोन्मुखी होते जा रहे हैं। वर्तमान व्यवस्था की वास्तविकता का सम्बन्ध न 1947 की आजादी से है, न प्रेमचन्द की परिकल्पना की आजादी से। सारे छद्म और आडम्बर के बावजूद ग्रामीण यथार्थ, आजादी की बुनियाद और उसका सारतत्व प्रेमचन्द युग से बेहतर नही है।

अपनी कथनी और कहनी में फर्क करने वाले प्रेमचन्द की कथनी और करनी पर आरोप लगाते हैं। स्वंय घृणास्पद कर्म करने वाले प्रेमचन्द को घृणा का प्रचारक आज भी कहते हैं तो यह भी उतरी ही सच है कि प्रेमचन्द से प्रेम करने वाले भी उतने ही बड़े और चढ़े हैं। प्रेमचन्द के लिए संघर्ष करने वाले, उनकी ऐतिहासिक व साहित्यिक महता का मूल्यांकन करने वाले आज भी जीवंत रूप से सक्रिय हैं द्वन्द्व शाश्वत है, अतः प्रेमचन्द भी शाश्वत है।

## 'महाजनी सभ्यता' निबंध की समीक्षात्मक विवेचना

हंस के सितम्बर 1936 के अंक में प्रेमचन्द का महाजनी सभ्यता नाम का लेख प्रकाशित हुआ। यह लेखक प्रेमचन्द की प्रखर होती हुई चेतना का सबूत है। प्रेमचन्द अन्तर राष्ट्रीय जगत की देखभाल भी रखते थे और अपने देश की जरूरतों को ध्यान में रखकर उस पर टीका टिप्पणी करते थे। वह रूवी साहित्य का आदर करने वाले भारतीय साहित्यकार थे। वह भारतेन्दु, बालमुकन्द गुप्त और महावीरप्रसाद द्विवेदी की परम्परा के सम्पादक, विचारक, समालोचक और निबंधकार थे।

प्रेमचन्द ने महाजनी सभ्यता से पूर्व जागीरदारी सभ्यता और साम्राज्यवाद के कुछ अवगुणों के साथ कुछ सदगुणों का भी जिक्र किया, लेकिन महाजनी सभ्यता के आधारभूत मूल तत्व धनलिप्सा की कटु निन्दा की है। इस लेख में उन्होने सारी दुनियां के मनुष्य समाज को दो हिस्सों में बंटा हुआ दिखाया है, बड़ा हिस्सा मरने खपने वालों का है और बहुत ही छोटा हिस्सा उन लोगों का है जो अपने शक्ति और प्रभाव से बड़े समुदाय को अपने बस में किए हुए हैं। उन्हे इस बड़े भाग के साथ किसी तरह की हमदर्दी नही है। उसका अस्तित्व केवल इसलिए है कि वह अपने मालिकों के लिए पसीना बहाए, खून गिराए और एक दिन चुपचाप इस दुनिया सें विदा हो जाए।

शोषण–आधारित इस सभ्यता में पैसे के बढ़ते प्रभाव का उन्होने विशद विश्लेषण किया है। उनका विचार है कि ऐसी सभ्यता धनवाद को भी भगवान मानती है। उन्हे दुख है कि साहित्य, संगीत कला भी धन की दहलीज पर माथा टेकने वालों में है। धर्म भी धन के हाथों बिका हुआ है। इस समाज व्यवस्था का प्रथम नीतिवाक्य है। 'समय ही धन है।' समय का सबसे अधिक उपयोग पैसा कमाना है। इस सभ्यता के डाक्टर, मास्टर, वकील सभी के जीवन की सार्थकता अधिक से अधिन धन कमाना है। उन्हे यह बात बहुत दुखद लगती है कि धन लोभ ने मनुष्यता और मित्रता को नष्ट कर दिया है। प्रेमचन्द चाहते हैं कि धन लिप्सा को इतना न बढने दिया जाए कि वह मनुष्यता, मित्रता स्नेह–सहानुभूति को ही नष्ट कर दे। महाजनी सभ्यता में पैसे के निरंतर बढते प्रभाव से वे चिंतित है। उनका विचार है कि इस सभ्यता के मनुष्य की सफलता की कसौटी केवल धन है। धनार्जन के सिवा उसे किसी काम से लगाव नही है। मनुष्य की सारी मानसिक, भावगत और सांस्कृतिक रूचियां इसी केन्द्र बिन्दु पर एकत्रित हो गई है। मनुष्य के स्वजन सम्बन्धी भी पैसे के ही पुजारी है। व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन पर धन का एकाधिकार सर्वनाशक है।

महाजनी सभ्यता का दूसरा सिद्धान्त प्रेमचन्द ने प्रतिपादित किया है। ''बिजनेस इज बिजनेस'' इसमें भावुकता के लिए गुजांइश नही है। उन्होने निर्लज्जता को इस नई सभ्यता की आत्मा कहा है। इसमें इन्सानियत और दोस्ती का लिहाज नही है। महाजनी सभ्यता की रीति निति में सर्वाधिक रक्त पिपासु सिद्धान्त है व्यवसाय सिद्धान्त। इसने सारे मानवीय, आत्मीय, सामाजिक, अध्यात्मिक नेह, नाते समाप्त कर दिए हैं। आदमी आदमी के बीच केवल व्यवसाय का लगाव है। इस सभ्यता की आत्मा उन्होने व्यक्तिवाद और स्वार्थवाद माना है। स्वार्थी मनुष्य ने अपना वर्तमान और भविष्य इसी सभ्यता को समर्पित कर दिया है।

महाजनी सभ्यता में मनुष्य को धन व्यापार और मुनाफे की वेदी पर किस तरह कुर्बान कर दिया गया है इसका मार्मिक विश्लेषण करने के बाद प्रेमचन्द ने पूंजीवादी सभ्यता को खत्म करने वाली रूस की नई सभ्यता के बारे में लिखा है। ''परन्तु अब एक सभ्यता का सूर्य सुदूर पश्चिम से उदय हो रहा है जिसने इस नारकीय महाजनवाद या पूंजीवाद की जड़ खोद कर फैंक दी है।'' इस नयी मानवीय सभ्यता के विरूद्ध दुनिया के महाजन किस तरह झूठा प्रचार कर रहे थे, प्रेमचन्द उससे अनजान नही थे। उन्होने इस झूठ का पर्दाफाश करना अपना कर्तव्य समझा था।

प्रेमचन्द चेतावनी देते हुए कहते हैं कि साम्राज्यवादी युद्धों की जड़ झूठ है। झूठे प्रचार के आधार पर लोगों को बहकाकर युद्ध की भटठी में नही झौंका जा सकता। प्रेमचन्द ने सोवियत विरोधी झूठे प्रचार का पर्दाफाश करके एक सच्चे शांति प्रचारक का काम किया। उन्होने विशेषकर इसी समस्या को लिया कि सोवियत रूस में आजादी है या नही। उन्होने इस नई सभ्यता के मूल सिद्धान्त का उल्लेख करते हुए लिखा– ''जिसका मूल सिद्धान्त यह है कि प्रत्येक व्यक्ति जो अपने शरीर या दिमाग से मेहनत करके कुछ पैदा कर सकता है राज्य और समाज का परम सम्मानित सदस्य हो जाता है लेकिन जो दूसरों की मेहनत या

बाप दादो के जोड़े हुए धन पर रईस बना फिरता है वह पतितम प्राणी है। उसे राज्य प्रबन्ध में राय देने का हक नही और यह नागरिकता के अधिकारों का भी पात्र नही। महाजन इस नई लहर से अति उद्धिग्न होकर बौखलाया हुआ फिर रहा है और सारी दुनिया के महाजनों की शामिल आवाज इस नई सभ्यता को कोस रही है, इसे शाप दे रही है। व्यक्ति स्वातन्त्रय धर्म विश्वास की स्वाधीनता और अन्तरात्मा के आदेश पर चलने की आजादी वह इन सबकी घातक और गला घोंट देने वाली बताई जा रही है। वह काले से काले रंग में रंगी जा रही है कुसित्त से कुत्सित रूप से चित्रित की जा रही है। पर सच्चाई यह है कि जो सारे अंधकार को चीरकर दुनिया में अपनी ज्योति का उजाला फैला रही है।'' इस प्रकार प्रेमचन्द ने अत्यन्त दृढ़ता और विश्वास के साथ सत्य का और मनुष्य के भविष्य का पक्ष लिया है। इन प्रखर विचारों को पढकर कौन कह सकता है कि महीनों के रोग से जर्जर शरीर वाले, मृत्यु शैय्या पर पड़े हुए प्रेमचन्द ने इन शब्दों को लिखा होगा। जिस सच्चाई ने अंधकार को चीरकर दुनिया में उजाला फैलाया था उसने प्रेमचन्द के मन में आशा और उत्साह का संचार कर दिया था। प्रेमचन्द ने एक तरफ मौत और अंधेरा था तो दूसरी तरफ यह सामाजिक सच्चाई थी और प्रकाश था। मनुष्य के बल और बुद्धि में, उसके पुरूषार्थ में, उनकी आस्था ओर दृढ़ हो गई। इसीलिए व्यक्ति स्वातंत्रय के नाम पर सोवियत रूस पर कीचड़ उछालने वालों को उन्होने खूबर खबर ली।

डा. धर्मेन्द्र गुप्त के मतानुसार–''प्रेमचन्द का समस्त चिंतन मार्क्सवाद की उस सच्चाई से जुड़ता है जो शोषण के विरूद्ध लगातार संघर्ष में विश्वास करता है जो सर्वहारा का पक्षधर है, जो व्यक्ति की गरिमा में विश्वास करता हुआ समता के समाज पर आधारित है।''

प्रेमचन्द ने साम्राज्यवादी प्रचारकों को ललकारते हुए लिखा था, ''निसन्देह इस नयी सभ्यता ने व्यक्ति स्वातंत्रय के पंजे नाखून और दांत तोड़ दिए थे। उसके राज्य में अब एक पूंजीपति लाखों मजदूरों का खून पीकर मोटा नही हो सकता। उसे अब यह आजादी नही है कि अपने नफे के लिए साधारण आवश्यकताओं की वस्तुओं के दाम चढ़ा सकें, अपने माल की खपत कराने के लिए युद्ध करा दें, गोलाबारूद और युद्ध सामग्री बनाकर दुर्बल राष्ट्रों का दलन कराएं।''

प्रेमचन्द ने इस आजस्वी निबंध में इन तथ्यों को अच्छी तरह स्पष्ट कर दिया था कि साम्राज्यवादियों के व्यक्ति स्वातंत्र का अधिकतम सम्बन्ध युद्ध की तैयारियों से होता है, उनकी आजादी महंगाई बढ़ाकर मुनाफा कमाने की आजादी है। उनकी स्वाधीनता दूसरे देशों को गुलाम बनाने की स्वाधीनता है। उन्होने स्पष्ट किया कि महाजनी समाज के इस शोषण और लूटमार की आजादी के बदले सोवियत रूस में जनता को सम्पन्न और सुसंस्कृत जीवन बीताने की वास्तविक आजादी है। इसी सन्दर्भ में उन्होने धर्म की सच्ची स्वतन्त्रता का भी खुलासा किया। धर्म की स्वतन्त्रता मुफतखोर पीड़ितों के दंभमय उपदेश नही बल्कि मन की पवित्रता और धर्माचरण की स्वाधीनता है। उन्होने धन के असमान वितरण को ही अनाचार और दुराचार का मूल कारण माना है। सारी सामाजिक बुराईयों को दौलत की देन माना है। महाजनी सभ्यता को उन्होने भ्रष्टाचार की जननी माना है। उनका सुझाव है कि पैसा –पूजा से सारी बुराईयां स्वंयभेव मिट जाएंगी।

प्रेमचन्द ने हिन्दुस्तान की वर्तमान दशा को देखते हुए लिखा है, ''इस समाज व्यवस्था ने (नई सभ्यता) व्यक्ति को यह स्वाधीनता नही दी कि वह जनसाधारण को अपनी महत्वकांक्षा की तृप्ति का साधन बनाए और तरह तरह के बहानों से उनकी मेहनत का फायदा उठाए या सरकारी पद प्राप्त करके मोटी–मोटी रकमें उड़ाए और मूंछों पर ताव देता फिरे।'' प्रेमचन्द इस प्रकार की भारतीय स्वतन्त्रता के प्रबल विरोधी थे जिसके लिए मुटटी भर लोग साधारण जन को ठग कर अपना ही घर भरते हैं। जब जनता अंसतुष्ट होकर अपनी मांगे पूरी कराने के लिए सगंठित होती है तो या तो उसे शांति और अहिंसा के उपदेश देते हैं या लाठी गोली की हिंसा से उन्हे हमेशा के लिए शांत कर देते हैं।

प्रेमचन्द ने 'महाजनी सभ्यता' में शोषण की आजादी और नई सभ्यता में समतामूलक समाज का अंतर स्पष्ट किया। भारतीय समाज में नेता और अफसर जनता के सेवक नही स्वामी बने फिरते हैं। नई सभ्यता में उन्हे यह आजादी नही होती। महाजनी सभ्यता के प्रेमी नई सभ्यता को क्यों चाहेगें?

इस निबंध के अन्त में प्रेमचन्द ने महाजनी सभ्यता के प्रेमियों के इस तर्क का उत्तर दिया कि विदेशी सभ्यता भारतीय वातावरण के अनुकूल नही है। प्रेमचन्द ने अपने विचार के समर्थन में ईसाई और बौद्धधर्म का उदाहरण दिया है। उन्होने लिखा है कि ''जो शासन विधान और समाज व्यवस्था एक देश के लिए कल्याणकारी है वह दूसरे देशों के लिए भी हितकर होगी। हां महाजनी सभ्यता और उसके गुर्गे अपनी शक्तिभर इसका विरोध करेगें, इसके बारे में भ्रमजनक बातों का प्रचार करेगें, जनसाधारण को बहकायेंगें उसकी आंखों में धूल झोंकेगे पर जो सत्य है एक न एक दिन उसकी विजय होगी और अवश्य होगी।'' वे वस्तुत मानवतावादी विचारक थे इसीलिए उन्होने अखिल विश्व मनुष्य को एक माना है।

इस प्रकार प्रेमचन्द ने सच और झूठ के संघर्ष में सच का पक्ष लिया और महाजनी सभ्यता के दलालों को और उनकी दलीलों को सारहीन सिद्ध कर दिया। प्रेमचन्द ने जिस समय यह निबंध लिखा था उस समय फासिस्ट जर्मनी सोवियत विरोधी प्रचार की वैसी ही धूम मचाए हुए था जैसी आज अमेरिका। प्रेमचन्द ने युद्ध प्रचार का भंड़ाफोड करके शांति पक्ष को मजबूत किया, हिन्दुस्तानी पाठकों की अन्तर राष्ट्रीयता और स्वाधीन चेतना को परिष्कृत किया। इस दृष्टि से यह निबंध अत्यन्त सार्थक है।

## सन्दर्भ सूचि


1. डा. शील कौशिक 'एक सच यह भी' पृष्ठ संख्या 08
2. वही पृष्ठ संख्या–07
3. वही पृष्ठ संख्या–07
4. वही पृष्ठ संख्या–07
5. वही पृष्ठ संख्या–24
6. वही पृष्ठ संख्या–32
7. वही पृष्ठ संख्या–38
8. वही पृष्ठ संख्या–39
9. वही पृष्ठ संख्या–56
10. वही पृष्ठ संख्या–78
11. वही पृष्ठ संख्या–108
12. वही पृष्ठ संख्या–23
13. वही पृष्ठ संख्या–27
14. वही पृष्ठ संख्या–66
15. वही पृष्ठ संख्या–108